International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 6.278
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बच्चन की आत्मकथा में नारी

डॉ. संतोष कौल काक*

आत्मकथा में व्यक्ति अर्थात आत्मकथाकार के जीवन से सम्बंधित भावनाओं , घटनाओं , क्रिया – प्रतिक्रियाओं , प्रसंगों एवं अनगिनत अनुभवों का समावेश होता है . डॉ. हरिवंशराय बच्चन के अनुसार " आत्मकथा लेखन की वह विधा है जिसमें लेखक इमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने काल , परिवेश से सामंजस्य अथवा संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है . "1.

बच्चनजी ने स्वयं अपनी आत्मकथा ' क्या भूलूँ क्या याद करूँ ' (1969) , ' नीड़ का निर्माण फिर ' (1970) , ' बसेरे से दूर ' (1985) , ' दशद्वार से सोपान तक ' (1986) – इन चार खण्डों में प्रस्तुत की है . इन आत्मकथा – खण्डों में लेखक के जीवन के विभिन्न अनुभव एवं उनकी निजी अनुभूतियों का समन्वित रूप उपस्थित हुआ है . इसमें कठोर परिश्रम , अथक संघर्षों , विषम परिस्थितियों से जूझते लेखक के सामाजिक– साहित्यिक विकास की , उनके परिष्कृत व समृद्ध होते हुए व्यक्तित्व की कहानी स्पष्ट होती है . इस कहानी में लेखक के अतीत में बिखरे हुए कुछ ऐसे विशिष्ट अनुभव – खंड हैं , जो उनके जीवन – विकास का एक क्रमिक चित्र उपस्थित करते हैं . इन क्रमिक चित्रों में कई ऐसे व्यक्तियों की रेखाएँ भी उभरती हैं जो अपने स्वभाव व चरित्र के कारण आत्मकथा को , लेखक के जीवन के यथार्थ को तो स्पष्ट करती ही हैं , साथ ही लेखक के अपने स्वभाव एवं चरित्र को एक सुन्दर रूप – आकर भी देती हैं . आत्मकथा – खण्डों के इन विभिन्न चरित्रों के अंतःबाह्य सौन्दर्य का चित्र प्रस्तुत करते हुए लेखक ने अपने प्रखर गद्य – कौशल का परिचय भी दे दिया है . इन चरित्रों में से कुछ नारी – चरित्रों पर यहाँ प्रकाश डालते हैं .

बच्चन ने माना है कि , " उनकी जीवन – परिधि का केंद्र नारी है . उन्हें बचपन से घर की स्त्रियों , लड़कियों के साथ उठने – बैठने , उनके साथ गाने – ढोलक – मजीरा बजाने का शौक था . "2. नारी किशोरावस्था से ही उनके जीवन की अंग – आवश्यकता, अनिवार्यता बन चुकी थी. इसकी एक वैचारिक पृष्ठभूमि भी उन्होंने दी है . जीवन में उनकी उपस्थिति– अनुपस्थिति से ही अधिकांशतः बच्चन का काव्य और जीवन – दर्शन प्रभावित होता दीखता है . उन्होंने अपने जीवन में भिन्न – भिन्न प्रकार से शक्ति का स्रोत बनकर आई नारियों के बहुत सरल , सहज एवं स्वाभाविक चित्र अपनी आत्मकथा में उकेरे हैं . इनका अंकन करते हुए लेखक ने स्वयं को भी जानने – पहचानने और परखने की कोशिश

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुम्बई।

की है . इस चुनौती भरे कार्य में जहाँ भी कोई कटु सत्य सामने आया है , वह घबराए – कतराए नहीं हैं और न ही कहीं अश्लीलता अथवा अनैतिकता आने पायी है .

बच्चनजी ने कहा है , " स्त्री योनि मात्र होती , तो भी उसे समझ लेना , या उन्हें वश में कर लेना शायद सहज न होता . पर वह उसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है . और वह इसी कारण आदि – सृष्टि से पुरुष के लिए अनबूझ पहेली बनी हुई है और शायद सदा के लिये बनी रहेगी . " 3. सही नारी की ' तलाश ' में नारी के कई रूप बच्चनजी के सामने आये. " नारी प्रमदा , नागिन , परिणीता , प्रेयसी , मयूरी , माँ , देवी , सहचरी , प्राणाधार शक्ति है . प्रमदाओं के भी कई रूप – मधुशाला , मधुबाला , मृगतृष्णा , चहबच्चे (डिब)– जिसमें प्रेम की मदिरा से वासना तक का कीचड़ होता है . "4. अतः स्पष्ट है कि नारी के केवल आदर्श चित्र वहाँ नहीं हैं, परन्तु नारी का वास्तविक रूप वे करुणा और ममताभरा ही मानते हैं. "नारी अपने मूल रूप में माँ ही है. उसके प्यार का आधार भी दया , करुणा, ममता है . वह अपने प्रेमी की व्यथा से विद्रवित होकर उसे अपनी बाहु – वल्लरी का स्पर्श देती है . "5.

बच्चनजी ने अपने जीवन में प्रेम के महत्त्व को स्वीकार किया है . मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति के जीवन में प्रेम की शक्ति से उसका प्यार एवं ममतापूर्ण व्यवहार निश्चित होता है , घृणा से हम घृणा , एग्रेशन और मृत्यु की ओर बढ़ते हैं . उनके जीवन की सफलताओं में इस प्रेम एवं ममता की प्रवृत्ति का बहुत बड़ा योगदान रहा है . उनके जीवन में यह प्रेम नर – नारी के लैंगिक आकर्षण तक सीमित होकर नहीं रहा , वरन उसमें वात्सल्य , स्नेह , सहानुभूति आदि भावों का भी समावेश हुआ है . माँ की ममता , उससे मिला हुआ संरक्षण बालक को विश्वासी एवं आक्रामक बनाता है . बच्चनजी के मातृसुख के आलंबन राधा , लछमनिया , सरस्वती , चम्पा आदि हैं .

बच्चन की स्मृति में जिस नारी पुरातन के मुख की पहली छाप पड़ी थी , वह थी उनकी वयोवृद्ध **बुआ परदादी – राधा** . जो थी ' सन से बालोंवाली , झुर्रीभरे गालोंवाली , और ममत्व से भरी ' . ससुराल से आई तो दुबारा न लौटी . भाई मिट्ठूलाल उसकी बात को कभी न टालते , वह भी अपने भाई मिट्ठूलाल से इतना प्रेम करती कि सदैव उसका गुणगान करती रहती . बाल्यकाल में परदादी बुआ के मुख से उनके विषय में किस्से – कहानियाँ सुनकर परदादा मिट्ठूलाल जैसे साहसी बनने की लालसा , आकांक्षा बच्चन में जागी , जिसे सुदृढ़ किया राधा की थ्योरी ने , " इस परिवार में लड़के पिता पर न जाकर पितामह पर जाते हैं . "6.

राधा – ईश्वर में आस्था रखनेवाली , निरक्षर पर तेज़ दिमाग महिला थी. अपने दुखपूर्ण जीवन के भोगे – झेले संघर्षों , अनुभवों ने उन्हें चालाक और साहसी बना दिया था . आवश्यकता पड़ने पर स्वरोजगार कर अपनी आर्थिक कमी की पूर्ति करनेवाली स्वाभिमानी राधा की हर विषय पर प्रतिक्रियाएँ उस समय की महिलाओं से बहुत अलग , सुनिश्चित व निर्भीक होती थीं , उनका व्यक्तित्व लेखक को विस्मय विमुग्ध कर देता . राधा की

दृढप्रतिज्ञता , रूढ़िविरोधी व्यक्तित्व ने ही लेखक के रुढिविरोधी व्यक्तित्व के विकास में नींव का काम किया . लेखक ने राधा के अंतिम दस वर्षों के महत्वपूर्ण सहवास में जो कुछ देखा – सुना , उसे सहेजा भी . राधा के बयाँ किये अद्भुत किस्से – कहानियाँ , वर्णन– कला पर उसका अद्‌वितीय अधिकार आदि ऐसे गुण थे जिसने लेखक में मजबूती , आत्मविश्वास , दृढ़ता के साथ – साथ संभवतः वर्णन – कला की नींव भी रखी . लेखक ने आत्मकथा में स्वीकार किया है कि अपराजेय रहने के प्रति उनकी यत्किंचित आस्था के मूल में कहीं राधा का ही हाथ रहा . संयोग देखिये कि अपनी बेटी महारानी से बेहद प्यार करनेवाली राधा बुआ की मृत्यु भी महारानी की मृत्यु के कुछ समय बाद ही हो गयी .

लछमनिया चमारिन को रिवाज के तौर पर बालक हरिवंश को पांच पैसे में बेचा गया था . उन्हें पाकर निःसंतान लछमनिया के वात्सल्य व ममता की पूर्ति भी हो गयी . बच्चन उन्हें ' चम्मा ' कहकर पुकारते थे . बच्चनजी ने आत्मकथा - खंड ' क्या भूलूँ क्या याद करूँ ' में कहा है कि चम्मा उन्हें जन्मदात्री से भी अधिक सुन्दर लगती थी . उन्हें सदैव चम्मा को देखकर यह एहसास होता कि उसकी आँखें किसी भीतर ही भीतर की वेदना से आर्द्र रहती थीं . चम्मा के प्रति अपनी सहज अनजान सहानुभूति के कारण वे अपने जन्मदिन पर पूरी की टोकरियों को ठोकर से पूरी तरह उलट देते हैं ताकि सारी पूरियाँ चम्मा दवारा बटोरी जा सकें , और उसे ऐसा करते देखकर उन्हें अत्यंत ख़ुशी मिलती है . अपने अंतिम समय में लेखक के हाथों मुँह में तुलसी – गंगाजल पाने की उस ममतामयी की इच्छा की पूर्ति करनेवाले बच्चनजी का यह कथन बच्चन के मन की गहराई में छिपी करूणा और अंतर्वेदना का परिचय दे देता है - , " किसी रूप में यदि उसकी वत्सलता का कोई आधार हो सकता था तो एक मैं , उसका होकर भी कितना न उसका . "7 .गाँधीजी के हरिजन – आन्दोलन और अछूतोद्धार – कार्यक्रम में विविध प्रकार से सहयोग करने पर लेखक को इस बात के लिए गर्व की अनुभूति हुई कि उन्होंने अपनी चम्मा की बिरादरी के साथ न्याय किया.

सरस्वती का अपभ्रंश यानि कि **सुरसती** नाम था बच्चनजी की माँ का . माँ के नाम का अर्थ पता चलने पर भोलेपन व अज्ञानता में ही यह सोचकर कि ' मैं तो सरस्वती का पुत्र हूँ .' – लेखक के मन में आत्मविश्वास एवं बल संचित हुआ और कवि बनने की इच्छा सुगबुगाई , जिसका जिक्र उन्होंने ' क्या भूलूँ क्या याद करूँ ' में किया है . वास्तव में वे न सरस्वती थीं न ही सुरों की देवी किन्तु संतान की रक्षा व भलाई के लिये व्रत – उपवास, विश्वास – लोकविश्वास , टोने – टोटके आदि को मानने – पालनेवाली एक भोली – भाली , गृहकार्य - दक्ष , पति – परायण भारतीय महिला थीं . एक ऐसी महिला जिसमें स्त्रियोचित कोमलता , सेवा - भावना , त्याग – बलिदान और अनथक कर्म करने की अपार शक्ति थी . स्मृति इतनी तेज़ कि सैंकड़ों गीत – भजन , कहानियाँ आदि याद थे उन्हें . पुत्र को रामायण सुना – सुनाकर संस्कार की मज़बूत बुनियादें डालती, उनकी हित – चिंता करती , काम करते – करते उसे पास बैठाल तख्ती लिखवाती , दीन – दुखियों की सेवा

आदि करती , यह समर्पिता गृहस्थिन सुरसती अपने बच्चों के विरोध में किसी की एक न सुनती , " जे हमरे बेटवा का मेहरा कही , उ खुद मेहरा हो जाई . "8. पर हिसाबी बुद्धि बिलकुल नहीं थी उनके पास . इन्हीं विचारों – संस्कारों से बच्चन की चेतना को सजग कर उन्हें जुझारू , आत्मविश्वासी और साहसी बनाने में माँ का देय कम महत्वपूर्ण नहीं है . कवि हरिवंश राय द्वारा माँ द्वारा लाड़ से दिए जानेवाले नाम ' बच्चन ' को ही अपने कवि नाम के रूप में स्वीकारना उनके माता के प्रति आदर व गहरे प्रेम का परिचायक है . माता की मृत्यु ने भी बच्चन को जीवन की नयी व्याख्या दी .

कर्कल बच्चनजी के किशोरावस्था के ऐसे अभिन्न मित्र थे , जिन्हें एक - दूसरे से भिन्न करनेवाली कोई भी चीज़ दोनों को ही असह्य थी . यह निकटता कर्कल के विवाह के बाद भी सामाप्त नहीं हुई अपितु कर्कल की गौरवर्णी पत्नी **चम्पा** ने कर्कल के साथ बच्चन को भी अपने जीवन में अभिन्न , अनिवार्य रूप में स्वीकार कर लिया था . कर्कल की असमय मृत्यु के आघात से बुरी तरह टूटे इन दो जीवों को एक दूसरे के सानिध्य में ही शांति मिलती थी . लेखक ने आत्मकथा में कहा है , " लगता है जैसे डूबते कोई दो व्यक्ति एक-दूसरे को तिनके की तरह पकड़ने का प्रयत्न कर रहे हों . "9. अपने इस लगाव को बच्चन ने वहीँ पर आगे' सैलाब में बहना 'कहा है , जिसे मनोविज्ञान ' क्रश ' कहता है . उनके बीच का यह प्रेम अपनी विविधता में श्रेष्ठ है . परन्तु चम्पा का यह साथ जब उनके लिए ' दुहरी आग ' बन गया तो इसकी सारी आँच स्वयं सहकर चम्पा ने अपना बड़प्पन दिखाया . अपने गर्भवती होने की बात न छिपाकर उसने ' साधू बनने की अपेक्षा अपने कर्मों – पापों को स्वीकार करने में लज्जित न होने और जीवन में ईमानदार बनने की प्रेरणाशक्ति बच्चनजी को दी . अपनी सास सुन्दर के साथ बदरीनाथ की यात्रा से लौटकर आने पर चम्पा के व्यक्तिगत प्रेम की परिणति वात्सल्य में हो जाती है और वह माँ बनकर बच्चनजी से कहती हैं , : स्कूल जाओ , खूब पढ़ना . "10. चम्पा के उस उदास मातृ रूप ने बच्चन को गहरे प्रभावित किया. लेखक की भूल , चम्पा की सीख , तमाम कष्टों – अवरोधों के बावजूद लेखक का खूब पढना , कवित्व के प्रति उनकी रूचि आदि यह सारी घटनाएँ मानो एक कड़ी में जुडी – सी लगती हैं . ऐसी चम्पा को लेखक ने अपनी आत्मकथा ' क्या भूलूँ क्या याद करूँ ' में ' वृक्ष परी ' कहा है , जो पर उगते ही फुर्र से उड़ जाती है . साथ ही उन्होंने चम्पा को ' अपने कवि होने से पूर्व ही कवि बन जाने ' की नींव भी माना है . अतः लेखक ने उसके साथ व्यतीत किये समय को अपने ' भीतर के कलाकार व मनुष्य के निर्माण का काल ' अर्थात ' आत्मनिर्माण का काल ' माना है .

श्रीकृष्ण – रानी (प्रकाशो) के संपर्क ने भी बच्चन के कवि – रूप को निखारा . उन्होंने बताया है कि रानी रुपी ' ख़ूबसूरत बला ' के साथ मिले अनुभवों का प्रभाव उस काल के उनके लेखन पर – ' मधुबाला ' पर पड़ा . आर्थिक रूप से कमज़ोर होने के बावजूद वे श्रीकृष्ण – प्रकाशो के घर को चलाते रहे . परन्तु अपने प्रेम और विश्वास का मोल कभी पैसों की शक्ल में तो कभी आत्महत्या जैसे कृत्य के द्वारा एक तरह की ' इमोशनल

ब्लैकमेलिंग ' की स्थिति में पहुँचते देख , उन्होंने यह सम्बन्ध तोड़ दिया . चम्पा के प्रेम में डूबे बच्चनजी को चम्पा ने ही उभारा था परन्तु रानी उर्फ़ प्रकाशो के प्रेम से वे स्वयं दूर हो गए थे .इस तरह इस सम्बन्ध ने उन्हें जीवन में व्यवहारिक होने का पाठ सिखाया.

श्यामा बच्चनजी की पहली पत्नी थी . श्यामा से उनका विवाह अत्यंत सादगी से , बिना दहेज़ लिए संपन्न हुआ . भोली , नन्ही , नादान , हँसमुख , जीवन की कटुता से अनजान, नवल कलिका सी श्यामा उन्हें ' ऊँचे आकाश में उडनेवाले एक पक्षी ' स्कायलार्क ' जैसी आभासित हुई . विवाह के बाद पहली रात को ही जब उन्हें श्यामा के बालिका – से सरल , स्वाभाविक , निस्वार्थ मन की झलक प्राप्त हुई , तब स्वयं को (चम्पा के साथ की अपनी बीती स्मृति के कारण) परिपक्व समझनेवाले बच्चनजी उसके योग्य बनने का प्रयास करने लगे . बच्चनजी ने आत्मकथा में बताया है कि यह स्कायलार्क आरंभिक दिनों में उनकी ' खेल की सहेली ' बनी . जिसे वे ' जॉय ' नाम से पुकारते थे . इस ' जॉय ' को लेखक ' ज्वॉय ' लिखते – जिसमे ज्वोइन करने , आकर मिल जाने का भाव उभरता है. परन्तु जीवन की प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष घटनाओं ने श्यामा को मानसिक रूप से पारिपक्व बना दिया . इस परिपक्वता का प्रभाव भी बच्चनजी पर पड़ा.

अपने मायके – ससुराल दोनों पक्षों के परिवार – जनों की सुविधा के ध्यान में वह स्वयं को भूल जातीं . अपनी माँ की तन – तोड़ सेवा से श्यामा को संक्रामक रोग मिला था . गौना और श्यामा का बुखार एक साथ घर आया था . पत्नी की बढ़ती बीमारी , आर्थिक विषमता से लेखक चिंताग्रस्त रहे . लेखक की बीमारी में श्यामा ने स्वयं की परवाह न करते हुए पति की जी – तोड़ सेवा की . अपनी अंत्रक्षय की बीमारी से जूझती श्यामा ने अपने जीवन के आनंद से दूर रहकर भी कभी अपने कष्ट – दुखों की चर्चा नहीं की . बच्चनजी के लिए , उनके संघर्षों में स्वयं को समर्पित कर उन्होंने पति के व्यक्तित्व में ही स्वयं को समाहित कर लिया . अतः अपने समस्त शारीरिक , आर्थिक कष्ट भुलाकर वह पति के सतत आगे पढने , बढ़ने को प्रोत्साहित करती रहती . लेखक के परिवार के सामाजिक बहिष्कार , उनके नए मकान की नीलामी आदि अनेक आर्थिक – सामाजिक , बाह्य एवं आन्तरिक संघषों की , उनके सुख – दुःख , आशा – निराशा की वह सहभागिनी व समभागिनी बनी . उनके शरीर की नहीं अपितु मन की इस संगिनी ने लेखक की विगत स्मृतियों , पीड़ाओं, संघर्षों के कारण उन्हें ' सफरिंग ' नाम दिया था . यही ' सफरिंग ' यानी वेदना बच्चनजी के व्यक्तित्व व उनकी कविता का मूल उत्स है. उन्होंने कहा है , " श्यामा की रुग्णावस्था मेरे भोक्ता के लिए ही नहीं , मेरे स्रष्टा के लिए भी उद्विग्नतापूर्ण थी. "11.

सदैव सहज जीवन के स्वप्न देखनेवाला सुन्दरता का आकांक्षी लेखक का मन अपनी उदार, त्यागमयी , ईर्ष्या – द्वेष रहित , सहिष्णु . सहधर्मिणी श्यामा को चुपचाप पीड़ा सहते , आत्मनियंत्रण व आत्मसमर्पण करते देखकर स्वयं भी साहसी व समरोन्मुख योद्धा बनता गया . धैर्य व संयम की शक्ति पाता गया . लेखक का जिदपूर्वक पत्नी श्यामा का पलंग

अपने कमरे में बिछवाना , श्यामा के बालों की लटो को ऊँगली पर लपेटना , उसके वस्त्रों– कपड़ों और दवाइयों का ध्यान रखना और पत्नी के साथ बिताए पलों का साहित्यिक , दार्शनिक दृष्टि से विश्लेषण करना आदि अत्यंत हृदयस्पर्शी है .कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं - उसी श्यामा का साथ नियति के क्रूर हाथों छूट जाने पर लेखक कहता है ," उस अन्धकार में सुप्त मौन मुहल्ले के एक घर के एक कमरे की चारपाई से उठता हुआ वह साँसों का स्वर कितना तीव्र भागता था. लगता था जैसे कोई आरे से मुझे चीर रहा है . 12 . या " केवल मैं पथराई आँखों से श्यामा के शव को देखता रहा . न मेरे मुँह से आह निकली , न मेरी आँखों से आँसूं गिरे – मुझे अक्षर – अक्षर में रोना जो था ." 13. "उनकी मृत्यु से आधा मैं भी मर गया था. मेरे जीवन में आधा वह भी जी रही है . "14.

प्रकाशो – प्रकरण और श्यामा की मृत्यु के पश्चात वेदना में डूबे लेखक की मुलाकात , अपने मित्र के घर **आइरिश तालिबुद्दीन** से हुई . उसके आकर्षण , रागात्मक लगाव में डूबे बच्चनजी उसके प्रेम को पाने , उससे विवाह करने हेतु परिवार के संस्कार एवं धर्म तक को न्योछावर कर देने को तत्पर हुए . परन्तु आइरिश ने न उनके हृदय की प्रतिध्वनि सुनी , न कोई प्रतिक्रिया ही व्यक्त की . वह उनकी मृगतृष्णा थी . उसके द्वारा किये गए उदासीन व्यवहार से , प्रेम अस्वीकृत कर दिए जाने से उनका प्रेम – पथ संघर्षमय हो गया. इस अनुभूति की छाया ' आकुल – अंतर ' में प्रस्फुटित हुई . यह निरपेक्ष व्यवहार बच्चनजी को दृढ़ता , धैर्य व साहस के साथ दुःख – सुख सहने का मन्त्र सिखा गया.

आत्मकथा में बच्चनजी ने ' **अ** ' के मौन प्रेम ' प्लेटॉनिक लव ' का उल्लेख भी किया है, जिसे उन्होंने कभी देखा , न सुना . वह लम्बे समय तक इस इंतज़ार में रही कि बच्चन उनकी मौन पुकार सुन लें . परन्तु जब बच्चनजी उसकी मौन पुकार के प्रति गूंगे – बहरे बने रहे तब आत्मवेदना से भरकर उसने स्वयं को अंधे- गूंगे और बहरों की सेवा में लगा दिया और श्रीलंका जाकर बस गयी .प्लेटॉनिक लव की इस जीवित मूर्ति को बच्चनजी ने ' आकाशगंगा ' कहा है.

हेब्सन कॉलेज की आकर्षक एवं मनोज्ञ प्राद्यापिका ' **मार्जोरी** ' ने बसेरे से दूर रहते समय विदेश में बच्चन को माँ का ममत्व दिया . उसने ' मधुशाला ' का अंग्रेजी अनुवाद भी किया . बच्चनजी स्वयं पर पड़े मार्जोरी के प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहते हैं , " जैसे बच्चे अपनी माँओं का सान्निध्य पाकर निश्चिन्त , क्वचित विनोद में , भीड़ में घुसते चले जाते हैं , वैसे ही मैंने मार्जोरी को अपने पास पाकर अनुभव किया . 15.

प्रेम , करुणा , आकर्षण आदि से गुज़रते हुए , सही नौकरी व सही नारी की तलाश में बच्चनजी मानसिक रूप से प्रौढ़ होते जा रहे थे . व्यवसाय व व्यक्तिगत जीवन में स्थिरता की तलाश भीतर ही भीतर कहीं सघन होती जा रही थी . तभी अचानक एक आकर्षक नारी **तेजी सूरी** से मुलाक़ात हुई , वे एक - दूसरे के प्रति आकर्षित हुए , न्यौछावर हुए और परिचय के कुछ घंटों के बाद ही जीवन – साथी बनकर (पति – पत्नी नहीं) सबके सामने उपस्थित हुए . जाति – धर्म , भाषा – शिक्षा , वर्ण – प्रान्त के बंधनों

को काटकर तेजी ने उनके जीवन में प्रवेश किया . परिवार की इच्छा के विरुद्ध विवाह का निर्णय लेने में उन्होंने दृढ़ता का परिचय दिया . सिविल मैरेज की रजिस्ट्री , माँ द्वारा पिता की मानस – पोथी में से राम – विवाह प्रसंग सुनाकर तेजी की माँग भरवाकर दोनों का विवाह संपन्न हुआ , इसका जिक्र लेखक ने ' नीड़ का निर्माण फिर ' में किया है . लेने को तेजी के हाथ को केवल लेखक का शारीरिक आश्रय था पर देने को उस हाथ के पास एक दुनिया थी. सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, शिष्ट, आत्मविश्वासी, बहादुर, आत्मसंयमी, प्रभावशाली , पति के कार्य में , प्रगति – विकास में सदा सहयोग देनेवाली तेजी में श्रद्धा , करुणा का सर्वोपरि रूप लेखक ने पाया . उनके संपर्क में लेखक ने माँ के सान्निध्य में रहनेवाले शिशु की सुरक्षितता , निश्चिंतता का अनुभव किया . लेखक ने आत्मकथा में बताया है कि अपने बच्चों पर आँच आने के ख्याल से चौकन्नी शेरनी -सी बन जानेवाली तेजी एक अच्छी माँ भी साबित हुई . ' ऑल इंडिया वीमंस कॉन्फ्रेंस ' की सेक्रेटरी के रूप में, नेताजी की स्त्री – ब्रिगेड : ' रानी ऑफ झाँसी ब्रिगेड ' की कप्तान के रूप में , ' अन्नपूर्णा ' की संचालिका के रूप में , नाटक – अभिनय , संगीत – क्षेत्र में हो या – एक कवि , अध्यापक , कलाकार को संभालती एक सुघड़ , सुचारू गृहिणी – हर रूप में , प्रत्येक स्थिति का सामना कर , हर दायित्व को सफलतापूर्वक निभानेवाली तेजी के विषय में उन्होंने लिखा है , " उनके मेरे सम्बन्ध की कुँजी उस करुणा में है जो उनके व्यक्तित्व में, स्वभाव में , प्रकृति में सर्वोपरि है. उनका प्रेम करुणाजन्य है... मेरा उनके प्रति प्रेम कृतज्ञताजन्य है . अपनी करुणा में उन्होंने मेरे लिए बहुत कुछ बलिदान किया है . "16. 'बसेरे से दूर ' में लेखक ने अपनी उन्नति , प्रगति , विकास , सफलता के लिए तेजी के त्याग व दायित्वभाव का , श्रम व संघर्ष के लिए सदैव प्रेरित करते रहने का हृदयस्पर्शी चित्र उकेरा है.

तेजी ने उन्हें देवी की दिव्यता , माँ की ममता , सहचरी की सद्भावना , प्राणाधार की प्राणदायिनी धारा का एक साथ सम्मिलित रूप से अनुभव कराया . अतः लेखक जब कभी उन्हें हारा , लाचार या बेबस पाते हैं , कातर हो जाते हैं. 'सतरंगिनी ', ' मिलन – यामिनी ' , ' प्रणय – पत्रिका ' के गीतों की प्रेरणा बनी तेजी के विषय में उन्होंने लिखा है, " मेरे इन बारह वर्षों के गीतों में जहाँ कहीं वे हैं ... प्रेयसी के रूप में . मेरा कवि , मेरे व्यक्ति की ओर से तेजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए इससे अधिक सुकुमार कुसुमांजलि नहीं समर्पित कर सकता था . "17.

इस प्रकार बच्चनजी ने स्वीकार किया है कि नारीत्व विविध रूपों में उनके पास आता , उनके दिल दुनिया पर दस्तक देता , उन्हें टटोलता , छेड़ता और सहलाता रहा . उन्हें तन–मन से ' ओक्युपाइड ' रखता रहा . पर तन – मन – प्राण से भिगोनेवाला नारी रूप जब तक उनसे न आ मिला , उनकी मृगतृष्णा बनी रही . उन्होंने अपनी आत्मकथा ' नीड का निर्माण फिर ' में विभिन्न स्थलों पर ज़िक्र भी किया है – ' नर – नारी के आकर्षण में उनका लोप – प्रतिलोप होना निर्णायक महत्त्व रखता है . ' , ' प्रत्येक व्यक्ति नर – नारी

का सम्मिश्रण होता है , किसी में नर अनुपाततः अधिक होता है , किसी में नारी .' , ' मेरे व्यक्तित्व में अन्तर्निहित नर से अन्तर्निहित नारी अधिक सबल है .' यह बताते हुए उन्होंने माना है कि उनके जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव उन नारियों का पड़ा जिनमे पौरुषत्व प्रधान और सबल था .

बच्चनजी की आत्मकथा के इन अंशों से यह एहसास होता है कि इन परिस्थितियों में पड़ा कोई भी सामान्य व्यक्ति हताश – निराश हो सकता था . जीवन से या नारी – जाति से मुँह मोड़ सकता था . लेकिन बच्चनजी ने इन संबंधों से लगातार प्राप्त होनेवाली असफलताओं में भी नारी के भीतरी स्वरुप को जाना , उनकी शक्तियों को आत्मसात किया और अपने जीवन में उनके प्रेय और श्रेय को स्वीकार किया . माँ की ममता से भरी लछमनिया ने समाज की ऊँच – नीच की भावना का कटु – बोध उन्हें कराया . राधा ने काव्य में , लेखन में पारदर्शी अभिव्यक्ति दी. चम्पा ने उन्हें ' करेज ऑफ़ कन्विक्शन ' दिया . श्यामा ने विशुद्ध समर्पण का अर्थ समझाया . प्रकाशो ने उनके कवि – रूप को निखारा . आइरिश के आकर्षण ने चहबच्चों में गिरने से बचाया और अंत में तेजी ने उन्हें वृक्ष – सा सबल आधार दिया . इसलिए इन चारों आत्मकथा – खण्डों में अनेक स्थलों पर नारी के प्रति आदरयुक्त गौरव का भाव दिखाई देता है. विशिष्ट स्थितियों , व्यक्तियों , उनसे प्राप्त अनुभवों व प्रभावों का वर्णन करते हुए ये आत्मकथा - खंड प्रेरक जीवन – काव्य हैं , जिनमें आत्मविश्लेषण है , आत्मपरीक्षण है पर पश्चाताप का भाव नहीं है .

सन्दर्भ – सूची

1. आत्मकथाकार के रूप में डॉ.हरिवंशराय बच्चन , डॉ. राजेन्द्र प्रसाद , पृ.सं.8.
2. क्या भूलूँ क्या याद करूँ , डॉ . हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 33 .
3. क्या भूलूँ क्या याद करूँ , डॉ. हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 210 .
4. नीड़ का निर्माण फिर , डॉ . हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 16 .
5. नीड़ का निर्माण फिर , डॉ . हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 157 .
6. क्या भूलूँ क्या याद करूँ , हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 81.
7. क्या भूलूँ क्या याद करूँ , हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 126.
8. वही , पृ. सं. 33 – 34 .
9. वही , पृ. सं. 215 – 16
10. वही , पृ. सं. 223
11. वही , पृ. सं. 236
12. नीड़ का निर्माण फिर , पृ. सं. 16 .
13. क्या भूलूँ क्या याद करूँ . पृ. सं. 23 .
14. बसेरे से दूर , हरिवंशराय बच्चन , पृ. सं. 65 – 66.
15. नीड़ का निर्माण फिर , हरिवंश राय बच्चन , पृ. सं. 269, 429 .
16. वही , पृ. सं. 429 – 430 .